# "वर्तमान परिपेक्ष में नाट्यशास्त्र में वर्णित तालशास्त्र की उपयोगिता एंव संभावना"

## "Vartaman Paripeksh me Natyashastra me Varnit Taalshastra Ki Upayogita Avam Sambhavana"

## (SYNOPSIS)

## (विषय–संक्षेप)

फ़ेकल्टी ऑफ परफार्मिंग आर्टस्

**द महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बडौदा**

पी.एच.डी.(संगीत–तबला) की उपाधी हेतु प्रस्तुत शोध सार


**शोधकर्ता विद्यार्थी**

**आकाशमान सुभाष चन्द्र**

**शोध निर्देशक (Guide)**

**प्रो0 गौरांग भावसार**


सत्यं शिवं सुन्दरम्

**तबला विभाग**

**द महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बडौदा**

**वर्ष–2016–2020**


**Registration Date:** 09/05/2016

**Registration No.:** FOPA/51

# वर्तमान परिपेक्ष में नाट्यशास्त्र में वर्णित तालशास्त्र की उपयोगिता एंव संभावना

**प्रस्तावना**— भारत वर्ष अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण विश्व में एक अलग असितत्व रखता है। सदियों पहले ही भारत में अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र, गणितशास्त्र, भूस्तरशास्त्र, खगोलविज्ञान, रसायनविज्ञान, साहित्य एवं कलाशास्त्र जैसे विषयों पर कार्य सम्पन्न हुए है। प्रागएतिहासिक काल से ही भारत वर्ष में अनेक विषय के ऊपर संशोधन कार्य होता रहा है। इसी कारण से विविध शास्त्रों का निर्माण भारत वर्ष में हुए, जिसमें आयुर्वेद शास्त्र, पाकशास्त्र, ध्वनिशास्त्र, कलाशास्त्र, संगीत शास्त्र इत्यादि शोधार्थी संगीत कला के तबला वाद्य क्षेत्र में कार्यरत होने के कारण प्राचीन संगीत शास्त्रों में उपलब्ध संगीत, वाद्य, नृत्य, नाट्य आदि कलाओं में उपयोगी तालशास्त्र का अध्यापन करके वर्तमान परिपेक्ष में तालशास्त्र की उपयोगिता के सन्दर्भ में शोधकार्य किया है।

शोधार्थी ने भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र में वर्णित तालशास्त्र की वर्तमान उपयोगिता के सन्दर्भ में कार्य प्रस्तुत किया है। वर्तमान परिपेक्ष में भारतीय संगीत विश्व फलक पर अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारतीय संगीत सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं स्थानीय परिस्थितियों के साथ अपना अलग अस्तित्त्व रखता है। भारतीय संगीत में ताल शास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है। यह ताल शास्त्र कि परम्परा वैदिक काल से विद्यमान है। वेदों एवं पुराणों में वर्णित संगीत विद्या का निर्माण हो, इस उद्देश्य से पंडित भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र की रचना की। आज भी भरत मुनि रचित नाट्य शास्त्र संगीत क्षेत्र में सर्वमान्य ग्रन्थ माना जाता है। इसलिए नाट्यशास्त्र को पंचमवेद भी कहा जाता है। समय परिवर्तन के साथ—साथ प्राचीन संगीत के स्वरूपों में अंतर आया और वर्तमान समय में जिस संगीत को हम जानते है, कि वह संगीत बदलते स्वरूपों में यहाँ तक पंहुचा है। आज संगीत शास्त्र का व्याप्त विस्तृत होता जा रहा है। संगीत में नवीन प्रादुर्भाव हमें मिलता है। संगीत में अनेकोनेक प्रयोग हो रहें है, ऐसे में हमें हमारे प्राचीन तथ्यों के विषय में उचित संशोधनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है। वर्तमान तालशास्त्र विशद तालशास्त्र के रूप में प्रस्थापित है। किन्तु हमारी प्राचीन ताल परम्परा का भी आज के सन्दर्भ में क्या महत्त्व है, यह भी हमें सोचना चाहिए। निःसंदेह वर्तमान ताल शास्त्र किसी न किसी रूप में प्राचीन ताल शास्त्र के साथ जुडा हुआ है। इसलिए पंडित भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र में वर्णित तालशास्त्रों का अध्यन करके वर्तमान परिपेक्ष में उनकी उपयोगिता एवं संभावनाओं को प्रस्तुत किया गया है।

## प्रस्तुत विषय पर शोध करने की आवश्यकता-

भारतीय संगीत का मुख्य आधार नाद और गति है अर्थात ताल और ध्वनि पर अवलंबित है। ध्वनि शास्त्र एक अलग विस्तृत विषय है, किन्तु शोधार्थी द्वारा तालशास्त्र पर शोध कार्य प्रस्तुत किया गया हैं। नाट्यशास्त्र एक वस्तुतः संगीत की तीनों शाखाओं का भारतीय संगीत की दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। आज हमें जो भी संगीत के विषय में शास्त्रीयता प्राप्त है, वह नाट्यशास्त्र की देन है। नाट्यशास्त्र को हम एक दृष्टिकोण से नहीं देख सकते क्योंकि संगीत का कोई भी विषय ऐसा नहीं है। जिसका विवेचन नाट्यशास्त्र में न दिया गया हो। शोधार्थी ने नाट्यशास्त्र में वर्णित तालशास्त्र के विषय का चयन किया था। ताल संगीत का अभिन्न अंग है, शोधार्थी ने  नाट्यशास्त्र में वर्णित ताल शास्त्र की वर्तमान उपयोगिता का वर्णन प्रस्तुत किया है। इस शोधकार्य के द्वारा एक नवीन तालशास्त्र करने का प्रयास किया गया है। जिससे संगीत के विद्यार्थियों संगीत के कलाकारों एवं समग्र संगीतज्ञों को लाभ व एक नवीन दृष्टिकोण संगीत के विद्यार्थियों को मिलेगा। इस कार्य से नाट्यशास्त्र और वर्तमान संगीत के विषय में नए तथ्यों को भी उजागर कर ताल के विषय में नई जानकारी प्राप्त हुई है।

## आंकड़े एकत्र करने की विधि

1. नाट्यशास्त्र के सभी संस्करणों का शोध पूर्ण रीति से अभ्यास किया गया है।
2. देशके वर्तमान नृत एवं संगीत के कलाकारों से विषय सम्बन्धित तथ्यों पर चर्चा की गयी है।
3. विभिन्न प्राच्य विद्या मन्दिर, संस्कृत ग्रंथालयों में जाकर नाट्यशास्त्र संबंध्ति विषय वस्तुओं का भी अभ्यास किया गया है।
4. मध्यकालीन एवं वर्तमान में लिखी नाट्यशास्त्र संदर्भित पुस्तकों का अध्यन किया गया है।
5. आधुनिक उपलब्ध सुविधा व इंटरनेटके माध्यम से भी दत्तसामग्री को एकत्र किया गया है।
6. संगीत कला विहार, संगीत जैसे संगीत के मान्यता प्राप्त पत्रिकाओं में प्रकाशित विविध नाट्यशास्त्र संर्दभित शोध लेखों का भी अध्ययन किया गया है। इसके अलावा अन्य शोध पत्रिकाओं एंव सेमिनार में प्रस्तुत हुए शोध पत्रों के प्रासीडिगं का भी अवश्यकतानुसार अध्ययन किया गया है।
7. विविध सेमिनार, कॉन्फरेन्स को शोधार्थ द्वारा भाग लिया गया है वहाँ उपस्थित संगीत विशेषज्ञों से भी साक्षतकार द्वारा प्राप्त नाट्यशास्त्र संबंधित तथ्यों को भी उजागर किया गया है।

शोधार्थी द्वारा यह प्रयास किया गया है, कि जहाँ–जहाँ से भी नाट्यशास्त्र सम्बन्धी जानकारी प्राप्त हुई है। उन सभी को एकत्र किया गया है और उस उपलब्ध दत्त सामग्री को उसकी उपयोगिता के अनुसार शोधार्थी ने शोध प्रबंध स्थान दिया गया है।

## पुनरवलोकन–

प्रस्तुत विषय के सम्बन्धित जो तथ्य प्राप्त हुए है, उनके अनुसार इस शोध कार्य को अधिक से अधिक पुनरावृत्ति से बचने का प्रयास किया गया है और सम्बन्धित विषय में नाट्यशास्त्र का ताल शास्त्र की दृष्टि से कार्य प्राप्त नहीं होता है। जो इस कार्य के महत्त्व को प्रस्तुत करता है और साथ ही इस कार्य की वस्तुनिष्ठता को भी व्यक्त करता है।

## शोधकार्य पद्धति एवं योजना–

प्रस्तुत शोध प्रबंध में तथ्यों को विश्लेषणात्मक एवं एतिहासिक कार्य पद्धति के द्वारा प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि नाट्यशास्त्र एक अति प्राचीन काल का ग्रन्थ है, जिसे पंचम वेद की उपाधि प्राप्त हैं। जिस कारण इसके शोध के लिए एतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया गया है, और संगीत का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ होने के कारण इसका विश्लेषणात्मक अध्ययन इसके नवीन तथ्यों को उजागर करने के उद्देश्य से किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध की भाषा को किलिष्ट न बना कर सरल तथा सुलभ बनाने का प्रयास किया गया है एंव वर्तमान शोध प्रविधि के अनुसार शोध कार्य को प्रस्तुत किया गया है।

## उद्देश्य–

नाट्यशास्त्र को पंचम वेद की संज्ञा दी गई है। भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र शोध की दृष्टि से एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसमें खोज के कई विषय समन्वित है, क्योंकि यह एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसमें कला का कोई भी क्षेत्र अछुता नहीं है व न ही कोई विषय। इसके अंतर्गत मानवशास्त्र, संस्कृति, संस्कार, समाजिक ज्ञान, विज्ञान, तन्त्र, मन्त्र सभी समन्वित है। शोधार्थी ने इस शोध प्रबंध के अंतर्गत नाट्यशास्त्र में वर्णित तालशास्त्र का वर्णन किया है। इस कार्य का मुख्य उद्देश्य ताल शास्त्र के प्रत्येक पहलुओं को भली–भांति समझने व उजागर करने का प्रयास किया हैं, जिसे इस शोध प्रबंध के माध्यम से प्रस्तुत किया है। साथ ही शोध के माध्यम

से तालशास्त्र को वर्णित किया है और उसकी वर्तमान उपयोगिता को भी साथ ही सिद्ध करते हुए, नाट्यशास्त्र के ताल शास्त्र की सम्भावनाओं को भी दर्शाया है।

# अनुक्रमणिका


| | |
|---|---|
| **अध्याय** | **विषय वस्तु** |
| | **कृतज्ञता** |
| | **विषय प्रवेश** |
| **अध्याय–1** | **भरत मुनि का परिचय** |
| **1.1** | भरत |
| **1.2** | भरत मुनि का जन्म स्थल |
| **1.3** | नाट्यशास्त्रीय परम्परा |
| **1.4** | कृशाश्व और शिलालिन |
| **1.5** | भरत एक परिचय |
| **1.6** | सहिंताकाल और भरत |
| **1.7** | नाट्यशास्त्र और भरत |
| **1.8** | नाट्य प्रणेता भरत |
| **1.9** | नाट्यशास्त्र ग्रन्थ एवं भरत |
| **1.10** | नाट्यशास्त्र का रचना काल |
| **1.10.1** | महाग्रामणी (गणेश) |
| **1.10.2** | प्राचीन जातियों और जनपद |
| **1.10.3** | नाट्यशास्त्र की प्राकृत एवं संस्कृत भाषा |
| **1.10.4** | नाट्यशास्त्र में प्राचीन काव्यशास्त्र की रुपरेखा |
| **1.10.4.1** | अलंकार |
| **1.10.4.2** | छंद |
| **1.10.5** | प्राचीन शिलालेखों और नाट्यशास्त्र |
| **1.11** | नाट्यशास्त्र में वर्णन पूर्वाचार्यो और प्राचीन ग्रन्थ |
| **1.11.1** | भरत मुनि के पूर्ववर्ती व समकालीन आचार्य |
| **1.11.1.1** | ब्रह्मा और महादेव |

**1.11.1.2** नारद

**1.11.1.3** स्वाति

**1.11.1.4** तम्बुरु

**1.11.1.5** नन्दी या नन्दिन

**1.11.1.6** अगस्त्य

**1.11.1.7** कश्यप

**1.11.1.8** दत्तिल

**1.11.1.9** कोहल

**1.11.1.10** अश्मचुट्ट तथा नखकुट्ट

**1.11.1.11** बादरायण तथा शातकर्णी

**प्रथम अध्याय–** भारत की संस्कृति व उसके संगीत का परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ–साथ यह अध्याय भरत मुनि के परिचय पर आधारित है। जिसके अंतर्गत भरत शब्द का अर्थ, भरत मुनि का जन्म स्थल, नाट्यशास्त्र की पम्परा, भरत का परिचय आदि को प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय के संगीत की चर्चा की गई है। इसके पश्चात् भरत शब्द के अर्थ को वर्णित करते हुए, भरत नाम और जाति, समुदाय आदि का वर्णन किया है। इसके बाद भरत के बारे में जहाँ से भी जो जानकारी प्राप्त हो सकी, उसका अध्ययन कर उसके बारे में बताया गया है। भरत मुनि का जन्म, स्थान आदि को बताया गया है, वह कहां के निवासी थे व वह कौन थे, इसके बारे में वर्णन किया गया है। और इसके पश्चात् नाट्यशास्त्र की पम्परा का वर्णन किया गया है। इसका रचना काल, व इसके लेखक के रूप में भरत की चर्चा की गई है। कृशाश्व और शिलालिन जैसे पूर्वाचार्यों की भी चर्चा की गई है। भरत का परिचय देते हुए, भरत कौन थे और इसका काल कौन सा था, इसकी पुष्टि करने का भी प्रयास किया गया है। भरत के काल को जानने के लिए सभी तथ्यों को प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया गया है। संहिता काल से लेकर भरत तक के काल को जानने का प्रयास किया गया है। नाट्यशास्त्र के प्रणेता के रूप में भरत की भी चर्चा की गई है। इसके पश्चात् भरत मुनि के पूर्वाचार्यों व परवर्ती आचार्यों के विषय में भी बताने का प्रयास किया गया है इस प्रकार प्रथम अध्याय के मुख्य केंद्र भरत मुनि को रखते हुए, इस अध्याय को प्रस्तुत किया गया है। जिससे शोधार्थी अपने शोध कार्य की वस्तुनिष्ठता और महत्त्व को स्पष्ट कर सके।

## अध्याय–2 नाट्यशास्त्र का परिचय

**2.1** नाट्यशास्त्र का रचना काल

**2.2** नाट्यशास्त्र के रचयिता

**2.3** नाट्यशास्त्र का स्वरूप

**2.4** नाट्यशास्त्र के संस्करण

**2.5** नाट्यशास्त्र का विषय संक्षेप

- **2.5.1** मंगलाचरण
- **2.5.2** प्रेक्षगृह के लक्षण
- **2.5.3** रंग देवताओं की पूजा
- **2.5.4** अमृतमंथन
- **2.5.5** पूर्वरंग विधान
- **2.5.6** रस शास्त्र
- **2.5.7** भावाध्याय
- **2.5.8** उपांगाभिनय
- **2.5.9** आंगिक अभिनय
- **2.5.10** शरीराभिनय
- **2.5.11** चारीविधान
- **2.5.12** मंडलविधान
- **2.5.13** गतिप्रचार
- **2.5.14** कक्ष्यापरिधि तथा लोकधर्मि–निरूपणाध्याय
- **2.5.15** वाचिकाभिनय
- **2.4.16** वृत्तिविधान
- **2.4.17** काव्यलक्षणादि (वाचिकाभिनये)
- **2.5.18** भाषा विधान
- **2.4.19** सम्बोधन तथा काकुस्वरव्यंजन
- **2.4.20** दशरुपनिरुपण
- **2.4.21** सन्धिसन्ध्यग्ड निरुपण

**2.4.22** वृत्तिविधान

**2.4.23** आहार्य अभिनयाध्याय

**2.4.24** सामान्य अभिनयाध्याय

**2.4.25** वैषिकोपचार विधान

**2.4.26** चित्राभिनयाध्याय

**2.5.27** नाट्य सिद्धि निरुपण

**2.4.28** आतोद्यविधान

**2.4.29** ततातोद्यविधान

**2.4.30** सुषिर–आतोद्य विधानाध्याय

**2.4.31** तालविधानाध्याय

**2.4.32** ध्रुवाविधान

**2.4.33** अवनद्धा तोद्यविधानाध्याय

**2.4.34** प्रकृतिविचाराध्याय

**2.4.35** भूमिका विकल्पाध्याय

**2.4.36** नाट्यावताराध्याय

**द्वितीय अध्याय**– इस अध्याय को नाट्यशास्त्र के सार के रूप में भी देखा जा सकता है। यह शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इस अध्याय के अंतर्गत मुख्य रूप से नाट्यशास्त्र की चर्चा की गई है। इस अध्याय में नाट्यशास्त्र का परिचय प्रस्तुत किया गया है। जिसके माध्यम से नाट्यशास्त्र को जानने में सहायता प्राप्त होती है। इस अध्याय में नाट्यशास्त्र का सार निहित है। इस अध्याय में नाट्यशास्त्र का परिचय देते हुए इसके रचना का समय इसके रचयिता व स्वरूप की चर्चा की गई है। इस अध्यााय के अंतर्गत नाट्यशास्त्र की रचना काल का कई तथ्यों व सक्ष्यों के साथ चर्चा की गई है व उसके विभिन्न संस्करणों के विषय में भी बताने का प्रयास किया गया है। इसके पश्चात् नाट्यशास्त्र के विषयों का संक्षेप में वर्णन किया गया है। नाट्यशास्त्र में 36 अध्यायों का वर्णन प्राप्त होता है, जिसमें से पहले अध्याय से सत्ताईसवें अध्याय तक नाट्य के विभिन्न तत्वों की चर्चा की गई है और अठाईसवें अध्याय से छत्तिसवें अध्याय तक संगीत की चर्चा प्राप्त होती है। जिसमें से इकत्तीसवां अध्याय ताल आधारित है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्रथम से छत्तीसवें अध्याय तक के सार को प्रस्तुत किया

गया है, जिससे शोधार्थ नाट्यशास्त्र के स्वरूप को ताल शास्त्र के सन्दर्भ में व्यक्त कर सके और साथ ही उसके महत्त्व के विषय में जानकारी प्रस्तुत की गई है। मंगलाचरण, प्रेक्षगृह केलक्षण, रंग देवताओं की पूजा, अमृतमंथन, पूर्वरंग विधान, रसशास्त्र, भावाध्याय, उपांगाभिनय, आंगिक अभिनय, चारीविधान, मंडलविधान, गतिप्रचार आदि सभी 36 अध्यायों का विस्तारपूर्वक अध्ययन कर वर्णन प्रस्तुत किया गया हैं।

**अध्याय–3 नाट्याशास्त्र में वर्णित तालशास्त्र**

**3.1** नाट्याशास्त्र के विभिन्न अध्यायों में वर्णित तालशास्त्र पक्ष

**3.1.1** मंगलाचरण

**3.1.2** प्रेक्षगृह के लक्षण

**3.1.3** रंग देवताओं की पूजा

**3.1.4** अमृतमंथन

**3.1.5** पूर्वरंग विधान

**3.1.6** चारीविधान

**3.1.7** गतिप्रचार

**3.1.8** कक्ष्या, परिधि तथा लोकधर्मी निरुपण

**3.1.9** आतोद्यविधान

**3.1.9.1** तत् वाद्य

**3.1.9.2** सुषिर वाद्य

**3.1.9.3** घन वाद्य

**3.1.9.4** अवनद्ध वाद्य

**3.1.10** ध्रुवाविधान

**3.1.11.1** अवनद्धातोद्यविधानाध्याय

**3.1.11.1.1** सोलह अक्षर

**3.1.11.1.2** चार मार्ग

**3.1.11.1.3** विलेपन(लेपन)

**3.1.11.1.4** षटकरण

**3.1.11.1.5** त्रियति

**3.1.11.1.6** त्रिलय

**3.1.11.1.7** त्रिपाणि (पाणि)

**3.1.11.1.8** त्रिगति

**3.1.11.1.9** त्रिसंयोग

**3.1.11.1.10** पंच पाणि प्रहत

**3.1.11.1.11** त्रिप्रहार

**3.1.11.1.12** त्रिमार्जना

**3.1.11.1.13** अलंकार

**3.1.11.1.14** जति

**3.1.11.1.15** त्रिप्रचार

**3.1.11.2.1** पणव

**3.1.11.2.2** दर्दुर

**3.1.11.2.3** मृदंग

**3.1.11.2.4** पटह

**3.1.11.2.5** झल्लरी

**3.1.12** भूमिका विकल्पाध्याय

**3.2** नाट्याशास्त्र में तालाध्याय

**3.3** नाट्याषस्त्र में तालध्याय में वर्णित ताल

**3.3.1** काल प्रमाण

**3.3.2** त्रिलय

**3.3.3** मार्ग

**3.3.3.1** चित्र मार्ग

**3.3.3.2** वार्तिक मार्ग

**3.3.3.3** दक्षिण मार्ग

**3.3.4** यति भेंद

**3.3.4.1** समा यति

**3.3.4.2** स्त्रोतोगता यति

**3.3.4.3** गोपुच्छा यति

**3.3.5** त्रिपाणि

**3.3.6** ताल क्रिया

**3.3.7** पात

**3.3.7.1** निशब्द क्रिया

**3.3.7.1.1** आवाप

**3.3.7.1.2** निष्क्राम

**3.3.7.1.3** विक्षेप

**3.3.7.1.4** प्रवेशक

**3.3.7.2** सशब्द क्रिया

**3.3.7.2.1** ध्रुवा

**3.3.7.2.2** शम्या

**3.3.7.2.3** ताल

**3.3.7.2.4** सन्निपात

**3.3.8** ताल के भेंद

**3.3.9.** नाट्यशास्त्र में वर्णित तालों का स्वरूप

**3.3.9.1** ताल चच्चत्पुट

**3.3.9.2** ताल चाचपुट

**3.3.9.3** ताल षट्पितापुत्रक

**3.3.9.4** ताल सम्पक्वेष्टाक

**3.3.9.5** ताल उद्घट

**3.3.10** चच्चपुट

**3.3.10.1** चच्चतपुट का यथाक्षर स्वरूप

**3.3.10.2** चच्चत्पुट का द्विकल स्वरूप

**3.3.10.3** चच्चत्पुट का चतुष्कल स्वरूप

**3.3.11** चाचपुटंग

**3.3.11.1** चाचपुटम का यथाक्षर स्वरूप

**3.3.11.2** चाचपुटम का द्विकल स्वरूप

**3.3.11.3** चाचपुटम का चतुष्कल रूप

**3.3.12** षट्पितापुत्रक

**3.3.12.1** षट्पितापुत्रक ताल का यथाक्षर स्वरूप

**3.3.12.2** षट्पितापुत्रक ताल का द्विकल स्वरूप

**3.3.12.3** षट्पितापुत्रक ताल का चतुष्कल स्वरूप

**3.3.13** सम्पक्वेष्टक

**3.3.13.1** सम्पक्वेष्टक ताल का यथाक्षर स्वरूप

**3.3.13.2** सम्पक्वेष्टक ताल का द्विकल स्वरूप

**3.3.13.3** सम्पक्वेष्टक ताल का चतुष्कल स्वरूप

**3.3.14** उद्घट्टम्

**3.3.14.1** उद्घट्टम् ताल का यथाक्षर स्वरूप

**3.3.14.2** उद्घट्टम् ताल का द्विकल स्वरूप

**3.3.14.3** उद्घट्टम् ताल का चतुष्कल स्वरूप

**तृतीय अध्याय**– यह अध्याय नाट्यशास्त्र के तालशास्त्र को ध्यान में रख कर लिखा गया है। इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा ताल के विभिन्न तत्वों को समन्वित किया गया है। इस अध्याय के अंतर्गत नाट्यशास्त्र के तालविधान अध्याय का पूर्ण वर्णन प्रस्तुत किया गया है। जिसके अंतर्गत तालविधान अध्याय में वर्णित ताल उनके नाम, उनका स्वरूप सभी वर्णित किया गया है। नाट्यशास्त्र के तालाध्याय के अंतर्गत कुल 502 श्लोको का वर्णन किया गया है। इसके पश्चात् सम्पूर्ण नाट्यशास्त्र के अंतर्गत जहाँ–जहाँ भी ताल क्रिया, ताल वाद्य व ताल का वर्णन किया गया है। उसको वर्णित करने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है। तालशास्त्र को वर्णित करने के उद्योग से ही छत्तीस अध्यायों का गहनता पूर्वक अध्ययन शोधार्थी द्वारा किया गया है। तथा अन्त में नाट्यशास्त्र आधारित ताल शास्त्र का वर्णन उदाहरण सहित प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है। ताल को केन्द्र में रखते हुए अध्ययन करने के पश्चात इस बात का ज्ञान प्राप्त होता है कि संगीत का आधार ताल है संगीत की कोई विधा ताल का सर्वोच्च स्थान है। जिस भरत मुनि द्वारा भी स्वीकारा गया है व नाट्यशास्त्र के अर्न्तगत दो मुख्य ताल चच्त्पुट तथा चाचपुट व उनके समिश्रण से अन्य तीन तालों का निर्माण होता है। इस प्रकार नाट्यशास्त्र में कुल पाँच तालों का वर्णन प्राप्त होता है।

**अध्याय–4 नाट्यशास्त्र में वर्णित ताल की वर्तमान उपयोगिता एंव संभावनाएं**

4.1 विभिन्न अध्यायों में वर्णित ताल की वर्तमान उपयोगिता

4.1.1 मंगलाचरण

4.1.2 प्रेक्षगृह के लक्षण

4.1.3 रंग देवताओं की पूजा

4.1.4 अमृतमंथन

4.1.5 पूर्वरंग विधान

4.1.6 चारीविधान

4.1.7 गतिप्रचार

4.1.8 कक्ष्या, परिधि तथा लोकधर्मी निरुपण

4.1.9 अवनद्धातोद्यविधानाध्याय

4.1.9.1 सोलह अक्षर

4.1.9.2 चार मार्ग

4.1.9.3 विलेपन(लेपन)

4.1.9.4 षटकरण

4.1.9.5 त्रियति

4.1.9.6 त्रिलय

4.1.9.7 त्रिपाणि (पाणि)

4.1.9.8 त्रिगति

4.1.9.9 त्रिप्रचार

4.1.9.10 त्रिसंयोग

4.1.9.11 पंचपाणि प्रहत

4.1.9.12 त्रिप्रहार

4.1.9.13 त्रिमार्जना

4.1.9.14 अलंकार

4.1.9.15 जाति

4.1.10 भूमिका विकल्पाध्याय

4.2 ताल अध्याय इक्तीसवें में वर्णित तालों की वर्तमान उपयोगिता

4.2.1 काल

4.2.2 मार्ग

4.2.2.1 चित्र मार्ग

4.2.2.2 वार्तिक मार्ग

4.2.2.3 दक्षिण मार्ग

4.2.3 क्रिया

4.2.4 अंग

4.2.5 ग्रह

4.2.6 जाति

4.2.7 कला

4.2.8 लय

4.2.9 यति

4.2.10 प्रस्तार

4.3 संगीत में तालों की वर्तमान उपयोगिता

4.3.1 गायन के संदर्भ में

4.3.2 वदन के संदर्भ में

4.3.3 नृत्य के संदर्भ में

4.3.4 नाट्य के संदर्भ में

**चतुर्थ अध्याय**– यह अध्याय नाट्यशास्त्र की तालशास्त्र पम्परा को प्रस्तुत करता है, कि किस प्रकार एक अति प्राचीन ग्रन्थ की उपयोगिता आज भी सार्थकता सिद्ध करता है। यह अध्याय नाट्यशास्त्र की वर्तमान उपयोगिता व महत्त्व को प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत अध्याय के अर्न्तगत समस्त ग्रन्थों में वणर्ति ताल संबंधित तथ्यों तथा तर्कों को रखने का प्रयास किया गया है। ताल की वर्तमान उपयोगिता को सिद्ध करने हेतु, वर्तमान में प्रयोग किए जाने वाले ताल के दस प्राणों के अर्न्तगत बताया गया है, तथा भारतीय संगीत पद्धतियों को वर्णित किया गया है। आज नाट्यशास्त्र का ताल"ाास्त्र तथा ताल वाद्य किस रूप पर प्रयोग हो रहे है, और उनमें किस प्रकार के परिवर्तन हुए है, इन साक्ष्यों को इस अध्याय के माध्यम से

प्रस्तुत किया गया है। इस नाट्यशास्त्र के अध्ययन के पश्चात् शोधार्थी को जो भी तथ्य प्राप्त हुए है उनकों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

## उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत सभी पांचों अध्यायों के सार व निष्कर्ष को समाहित किया गया हैं। समस्त अध्यायों व उनकें उपअध्यायों के भी सार प्रस्तुत किया गया हैं। प्रथम अध्याय में भरत के काल व भरत सम्बन्धित विषयों को बताने का प्रयास किया गया है, द्वितीय अध्याय में नाट्यशास्त्र के रचनाकाल तथा नाट्यशास्त्र के समस्त अध्यायों का परिचय आदि प्रस्तुत किया गया है, तृतीय अध्याय के अंतर्गत समस्त नाट्यशास्त्र का ताल"ाास्त्र का वर्णन व अंतिम अध्याय के अंतर्गत नाट्यशास्त्र में वर्णित ताल की वर्तमान उपयोगिता व संभावनाओं को वर्णित किया गया हैं और इन सभी का एक पूर्ण निष्कर्ष पंचम अध्याय में उपसंहार के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


**1.** अनुवाद मिश्र ब्रजवल्लभ/भरत और उनका नाट्यशास्त्रम/उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद–1988

**2.** अनुवाद शुक्ल शास्त्रीबाबूलाल/भरत नाट्यशास्त्र/चौखम्बा पब्लिकेशन/नई दिल्ली 2012/ISBN-978-9381608234

**3.** अभिनव गुप्त/अभिनव भारती टीका–नाट्यशास्त्र/प्राच्य विद्या मदिंर/बडौदा 2003

**4.** अमरकोष/अमर सिंह/नारायणराम आचार्य/चौखम्बा ओरियन्टल/दिल्ली

**5.** कवि रामकृष्ण/नाट्यशास्त्र/प्राच्यविद्या मदिंर/बडौदा 1968/ISBN-978-58823074-5-4

**6.** जगदेकमल/संगीत चूडामणि/प्राच्य विद्या मदिंर/बडौदा

**7.** नारद/संगीत मकरंद/प्राच्य विद्या मंदिर/बडौदा

**8.** पं0 दामोदर/संगीत दर्पण/ संगीत कार्यालय/हाथरस

**9.** पटेल डॉ0जमुना प्रसाद/तालवाद्य परिचय/कनिष्कपब्लिशिंग/दिल्ली/ISBN- 9788184577433

**10.** पाण्डे डॉ0 सुधाँशु/ताल प्राण/सांस्कृतिक दर्पण/लखनऊ 2013/ISBN-978-8192555553

**11.** पाण्डे डॉ0 सुधाँशु/ताल प्रत्यय/सांस्कृतिक दर्पण/लखनऊ 2013/ISBN-9788192555515

**12.** दाधीच डॉ पुरू/कथक नृत्य शिक्षा भाग-2/बिन्दु प्रकाशन/इन्दौर/ISBN-8190105744

**13.** दाधीच डॉ0 पुरू/नाट्यशास्त्र का संगीत विवेचन/बिन्दु प्रकाशन इन्दौर/ISBN-8190005618

**14.** भूवनदेव आचार्य / अपराजित / अपराजितपृच्छा / प्राच्य विद्या मदिंर / बडौदा

**15.** सम्पादक–डॉ0 कृष्ण / अहोबल संगीत पारिजात / चौखम्बा कृष्णदास अकादमी / वाराणसी

**16.** त्रिपाठी राधावल्लभ / नाट्यशास्त्र विश्वकोश भाग4 / न्यूभारतीय बुककोपरेशन / ISBN-9788183151603

इस प्रकार संदर्भ ग्रन्थ सूची प्रस्तुत की गई है। जिससे इस कार्य की वस्तुनिष्ठता को प्रमाणित जा सके।

****************